2.3.2 शिक्षक प्रभावी शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं के लिए ऑनलाइन संसाधनों सहित आईसीटी-सक्षम टूल का उपयोग करते हैं

Teachers use ICT- enabled tools including online resources for effective teaching and learning processes

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रभावी शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं के लिए ऑनलाइन संसाधनों सहित आईसीटी-सक्षम टूल का उपयोग करते हैं। यहाँ की सभी कक्षाओं के लिए सुसज्जित किया गया पाठ्यक्रम सभी विद्यार्थियों के विशेष उपयोगी है। इस विश्वविद्यालय के शिक्षक, शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में अन्तर्जाल (इंटरनेट) पर उपलब्ध सामग्रियों को शामिल करते हुए सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) एकीकृत उपकरणों का उपयोग करते हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग शिक्षा में बहुत उपयोगी है और विषय वस्तु का स्पष्टीकरण आसानी से हो जाता है।

यह विश्वविद्यालय विभिन्न कक्षाओं में विभिन्न पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इन सभी पाठ्यक्रमों में यहाँ के शिक्षक छात्रों को इन्हें ठीक से समझने में सहायता करने के लिए अन्तर्जाल पर उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हैं। इसके प्रयोग से विद्यार्थी प्रत्येक विषय को आसानी से समझने योग्य बनाते हैं और अपने जीवन में सफलता पाते हैं।

शिक्षा का क्षेत्र संकुचित नहीं, बल्कि विस्तृत है। जब शिक्षा की बात आती है तो इसमें केवल अध्ययन-अध्यापन ही नहीं होता, बल्कि शिक्षा के बहुत अङ्ग होते हैं। प्रत्येक स्थान पर अन्तर्जाल उपकरणों का उपयोग हो रहा है। यथा -

अध्ययन में	सम्प्रेषण में
अध्यापन में	शिक्षा के प्रचार व प्रसार में
मूल्याङ्कन में	
अनुसन्धान में	शिक्षणपद्धतियों के विकास में
प्रस्तुतीकरण में	

अध्ययन में-

पृथक पृथक कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्र अगर पढ़ाई के समय से अतिरिक्त अन्तर्जाल माध्यम से भी अध्ययन सामग्री ढूंढकर पढ़ें तो उन्हें बहुत लाभ होता है। इससे छात्रों का समय भी बच जाता है, जिससे वे बचे हुए समय का अन्यत्र सदुपयोग कर सकते हैं। इस विश्वविद्यालय में भी छात्र अपने अध्ययन के लिए सामग्री अन्तर्जाल पर ढूंढते हैं।

वे सभी इसका उपयोग करते हैं, व्हाट्सएप के माध्यम से छात्रों को कक्षा की सभी जानकारी एक साथ प्राप्त होती है।

अध्यापन में -

अन्तर्जाल पर उपलब्ध सामग्री विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी बहुत उपयोगी है। यहाँ के शिक्षक अपना ज्ञान बढ़ाने और छात्रों में रुचि उत्पन्न करने के लिए अन्तर्जाल पर उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हैं। यदि शिक्षक पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट पुस्तकों के विषय के लिए अन्तर्जाल पर खोजते हैं, तो बहुत सारा नया ज्ञान और नए दृष्टिकोण उपलब्ध होता है। इससे विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों को बहुत लाभ होता है।

मूल्यांकन में -

शिक्षक अपने शिक्षण के अन्त में छात्रों का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न प्रक्रियाएँ अपनाते हैं। उदाहरणार्थ- मौखिक परीक्षाएँ, लिखित परीक्षाएँ, दृश्य सामग्री पर अध्ययन किए गए विषय की प्रस्तुति आदि। इस प्रकार अन्तर्जाल का उपयोग करके छात्रों के मूल्यांकन की भी बहुत आवश्यकता है, जो शिक्षकों को कम समय में छात्रों का सही मूल्यांकन करने में सक्षम बनाता है। ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र में विशेषरूप से इसका प्रयोग होता है।

शोध में-

शोध का अर्थ है किसी नवीन वस्तु की खोज करना। अन्तर्जाल पर उपलब्ध सामग्री हमारे अन्वेषण-तत्त्वों को बढ़ाते हैं। अन्तर्जाल पर किसी भी विषय का ज्ञान सरलता से हो सकता है। यहाँ के शोधार्थी अपने शोध की विषय-वस्तु का पता लगाने के लिए उपलब्ध सामग्रियों को इंटरनेट पर ढूंढते हैं और उन्हें अपने शोध में उपयोग करते हैं।

प्रस्तुतीकरण में -

शिक्षक अपने विषयों को प्रस्तुत करने के लिए इस विधि का बड़े स्तर पर उपयोग करते हैं, क्योंकि इस विधि का उपयोग करके किसी भी विषय को सही प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

संचार में -

अन्तर्जाल का उपयोग शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह बिना किसी असावधानी के किसी भी विषय वस्तु के त्वरित संचार की सुविधा प्रदान करता है। शिक्षक (यूट्यूब, फेसबुक, जूम) इत्यादि उपकरणों का पर्याप्त प्रयोग करते हैं।

शिक्षा के प्रचार व प्रसार में-

इस विधि का उपयोग करने से शिक्षा का प्रचार व प्रसार करना आसान हो जाता है। मुख्यतः प्रो. रमेश प्रसाद, प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी आदि के बहुत सारे व्याख्यान अन्तर्जाल पर भी उपलब्ध है। इसलिए शिक्षक छात्रों या समाज में शिक्षा स्थापित करने के लिए इस विधि पर्याप्त उपयोग करते हैं।

ग्रन्थों के लेखन व प्रकाशन में-

इस पद्धति का पालन करने से पाठ को अन्तर्जाल से लिखना व उसे प्रकाशित करना आसान हो जाता है। किसी कार्य को करने के लिए अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए इस विश्वविद्यालय के शिक्षकों को अपनी पुस्तकों को लिखते समय इस विधि का उपयोग अवश्य करना चाहिए ।

शिक्षा पद्धतियों के विकास में -

इसके लिए सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की बहुत आवश्यकता होती है। यही कारण है कि इस विश्वविद्यालय के शिक्षक और शिक्षार्थी इन विधियों को विकसित करने के लिए इस विधि का सर्वोत्तम उपयोग कर रहे हैं, ताकि शिक्षण विधियों को तकनीकी विधि से सुचारू रूप से विकसित किया जा सके।

संगणक प्रकोष्ठ -

संगणक के क्षेत्र में छात्रों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय में एक संगणक प्रकोष्ठ भी स्थापित है जहाँ छात्र समय-समय पर एक साथ आते हैं और संगणक विशेषज्ञों से प्रशिक्षण प्राप्त करते है। शिक्षक भी समय-समय पर छात्रों की संगणक में रुचि बढ़ाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। सीखने तक की प्रक्रिया में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता को देखते हुए विश्वविद्यालय के पास ये सम्बन्धित उपकरण है-

दृश्योपकरण	दूरदर्शन
श्रव्योपकरण	लैपटॉप
प्रोजेक्टर	कैमरा
संगणक	डिजिटकल बोर्ड

इस विश्वविद्यालय में समय-समय पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में ज्ञान प्रणाली को सरल बनाने के लिए किया जाता है। सभी कार्यक्रमों की रूपरेखा उनके कार्यक्रमों का संग्रह जैसे- राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार कार्यशालाएँ, विद्वत् व्याख्यान और छात्र प्रतियोगिताएँ आदि अन्तर्जाल उपकरणों के माध्यम से आयोजित एवं संगृहीत किए जाते हैं।